Subject: Sociology
Class: B.A.
Year: 3rd
Name of The Paper: Pioneers of Indian Sociology
Topic: changes in Caste System
Key word: Sociola Issues, Untochability

Ms Shashi Prabha Gautam
Assistant professor – sociology
Government degree college jakhini, varanasi
Email- shashi.socio@gmail.com

जाति-प्रथा प्राचीन हिन्दू समाज की एक प्रमुख विशेषता है। किन्तु यह कब और कैसे शुरू हुई, इस पर अत्यन्त मतभेद है।

- जाति व्यवस्था एक सामाजिक बुराई है जो प्राचीन काल से भारतीय समाज में मौजूद है। वर्षों से लोग इसकी आलोचना कर रहे हैं लेकिन फिर भी जाति व्यवस्था ने हमारे देश के सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर अपनी पकड़ मजबूत बनाए रखी है।
- भारतीय समाज में सदियों से कुछ सामाजिक बुराईयां प्रचलित रही हैं और जाति व्यवस्था भी उन्हीं में से एक है। हालांकि, जाति व्यवस्था की अवधारणा में इस अवधि के दौरान कुछ परिवर्तन जरूर आया है और इसकी मान्यताएं अब उतनी रूढ़िवादी नहीं रही है जितनी पहले हुआ करती थीं, लेकिन इसके बावजूद यह अभी भी देश में लोगों के धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन पर असर डाल रही है।

उत्पत्ति

- ऋग वैदिक कालीन वर्ण व्यवस्था (व्यवसाय के आधार पर निर्धारण) उत्तर वैदिक काल के आते आते जाति व्यवस्था (जन्म के आधार पर निर्धारण) में परिवर्तित हो गई थी।
- यह माना जाता है कि ये समूह हिंदू धर्म के अनुसार सृष्टि के निर्माता भगवान ब्रह्मा के द्वारा अस्तित्व में आए। भारत में जाति व्यवस्था लोगों को चार अलग-अलग श्रेणियों - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र - में बांटती है।
- विकास सिद्धान्त के अनुसार सामाजिक विकास के कारण जाति प्रथा की उत्पत्ति हुई है। सभ्यता के लंबे और मन्द विकास के कारण जाति प्रथा मे कुछ दोष भी आते गए। इसका सबसे बङा दोष छुआछुत की भावना है। परन्तु विभिन्न प्रयासों से यह सामाजिक बुराई दूर होती जा रही है।

जाति व्यवस्था का परम्परागत स्वरूप निम्न बिन्दुओं में जाना जा सकता हैं.

- जाति की सदस्यता कर्म पर आधारित न होकर जन्म पर ही आधारित रहती हैं.
- एक जाति के व्यक्ति साधारणतः अपने जाति के लोगों के साथ ही खानपान का सम्बन्ध रखते हैं.
- अधिकांश जातियों के निश्चित व्यवसाय होते हैं.
- जाति प्रणाली में ब्राह्मणों की श्रेष्ठता पर आधारित हैं.
- सभी जातियों में ऊंच नीच तथा छुआछूत सम्बन्धी नियम पाए जाते हैं.
- जाति प्रणाली में निम्न जातियों के सदस्यों के लिए अनेक सामाजिक तथा धार्मिक निर्योग्यताएं होती हैं.
- एक जाति के सदस्य अपनी जाति में ही विवाह कर सकते हैं.

जाति व्यवस्था की निरंतरता तथा अनुकूलन की प्रकृति के बावजूद इसमें अनेक परिवर्तन हुए हैं, जो निम्नलिखित हैं-

- जातीय संस्तरण में बदलाव
- ब्राह्मणों की प्रस्थिति में हास
- व्यावसायिक चयन में स्वतन्त्रता
- भोजन तथा विवाह संबंधी प्रतिबंधों में बदलाव में
- अस्पृश्य जातियों के अधिकारों में बढ़ोत्तरी
- बदलते हुए जातीय संबंध
- जातीय समितियों और संगठनों का निर्माण